मयूरपंख

हिंदी पाठ्यपुस्तक

6

AUGMENTED REALITY
(Android Mobile App)
(See back cover for user guide)

हेल्प लाइन

Scanned with CamScanner

1

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

कविता का सार

शिवमंगल सिंह 'सुमन' संवेदनात्मक गीतकारों की श्रेणी में आते हैं। इस कविता में उन्होंने पिंजरे में बंद पक्षियों की मनोव्यथा का चित्रण किया है। कवि ने अपनी लेखनी के माध्यम से पक्षियों के स्वतंत्र विचरण की आकांक्षा को स्वर दिया है।

चिंतन की कड़ियाँ

हम सभी आज़ाद रहकर जीवन व्यतीत करना पसंद करते हैं। अपनी खुशी और इच्छापूर्ति के लिए हर संभव प्रयास करते हैं परंतु इस प्रयास में कई बार कुछ लोग पशु-पक्षियों को हानि भी पहुँचाते हैं। पक्षियों के स्वतंत्र विचरण पर रोक लगाकर उन्हें पिंजरे में कैद करते हैं। हमारा कर्तव्य है कि ईश्वर प्रदत्त पक्षियों की उड़ान में बाधा न डालें।

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीने वाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक कटोरी की मैदा से।

स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

Scanned with CamScanner

शब्दार्थ

उन्मुक्त	–	स्वतंत्र, किसी बंधन के बिना	पिंजरबद्ध	–	पिंजरे में कैद
कनक-तीलियाँ	–	सोने की सलाखें	पुलकित	–	प्रसन्नचित्त
कटुक	–	कड़वा	शृंखला	–	कड़ी
तरु	–	पेड़	फुनगी	–	पेड़ की सबसे ऊँची शाखा का किनारा
अरमान	–	दिल की इच्छा	तारक	–	तारों के समान
क्षितिज	–	जहाँ धरती व आकाश मिलते दिखाई देते हों	आश्रय	–	सहारा
आकुल	–	बेचैन	विघ्न	–	बाधा

ज्ञान मंजूषा

* पराधीनता में कभी सुख नहीं मिलता। इस संबंध में रामचरितमानस की निम्नलिखित समभाव पंक्तियाँ पढ़िए–
  पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं,
  कर विचार देखहुँ मन माहीं।
* डॉ॰ सलीम अली पक्षी वैज्ञानिक थे। इन्होंने पक्षियों पर अनेक खोजें की थीं। हमारे देश में कई पक्षी अभयारण्य हैं। यहाँ विश्व के कोने-कोने से पक्षी आकर प्रवास करते हैं।

शिवमंगल सिंह 'सुमन'
जन्म : 05-08-1915
मृत्यु : 27-11-2002

रचनाकार-परिचय

हिंदी साहित्य जगत के संवेदनात्मक गीतकार **शिवमंगल सिंह 'सुमन'** का जन्म 5 अगस्त 1915 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले के गाँव झगरपुर में हुआ था। इन्होंने अनेक शैक्षणिक संस्थाओं एवं हिंदी संस्थान के उच्चतम पदों पर कार्य किया। इनकी कृति 'मिट्टी की बारात' पर इन्हें सन् 1974 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। सन् 1999 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में अमूल्य योगदान के लिए भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। 27 नवंबर 2002 को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया।

प्रमुख कृतियाँ– हिल्लोल, पर आँखें नहीं भरीं, जीवन के गान, विश्वास बढ़ता ही गया, कटे अँगूठों की वंदनवारें आदि।

अभ्यास

कविता की समझ (Comprehension Skills)

* Listening and Writing Skills
* Oral Expression
* MCQs
* Fill in the Blanks
* Written Expression
  — Based on Passage
  — Short Answer Type Questions
  — Long Answer Type Questions

1. श्रुतलेख

पिंजरबद्ध　　निबौरी　　स्वर्ण-शृंखला
क्षितिज　　आश्रय　　विघ्न

Scanned with CamScanner

मौखिक प्रश्न (Oral Questions)

2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) पक्षी किसमें विघ्न नहीं चाहते हैं?

(ख) पक्षी 'कनक कटोरी' की मैदा की अपेक्षा किसे पसंद करते हैं?

3. कविता के अनुसार सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) पक्षियों की पसंद क्या है?

(अ) सोने की कटोरी में खाना ◯ (ब) कैद की ज़िंदगी ◯

(स) स्वतंत्र विचरण ◯ (द) महलों में रहना ◯

(ख) पंखों की सार्थकता तभी है जब–

(अ) उन्हें सँजोया जाए। ◯ (ब) उड़ने को सीमित किया जाए। ◯

(स) उड़ने में विघ्न न डाला जाए। ◯ (द) उन्हें सजाया जाए। ◯

(ग) कविता के अनुसार पंछी कैसे गगन के पंछी हैं?

(अ) स्वतंत्र ◯ (ब) परतंत्र ◯ (स) नीले ◯ (द) सफ़ेद ◯

लिखित प्रश्न (Written Questions)

4. कविता की अधूरी पंक्तियाँ पूरी कीजिए–

(क) _____ से टकराकर पुलकित पंख टूट जाएँगे।

(ख) कहीं भली है _____ कनक कटोरी की मैदा से।

(ग) नीड़ न दो, चाहे टहनी का _____।

(घ) ऐसे थे अरमान _____।

5. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।
ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

(क) पक्षी अपनी गति और उड़ान क्यों भूल गए हैं?

(ख) पक्षी कहाँ तक उड़ना चाहते हैं?

(ग) कैद पक्षी किस प्रकार का सपना देखते हैं?

(घ) लाल किरण का तारों के साथ क्या संबंध है?

(ङ) 'नभ' शब्द के दो पर्यायवाची लिखिए।

6. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

लघूत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

(क) वृक्ष की फुनगी पर पक्षी को झूला कौन देता है?

(ख) कवि के अनुसार पिंजरबद्ध पक्षी के क्या अरमान थे?

(ग) पिंजरे में कैद पक्षी गीत क्यों नहीं गाना चाहता?

(घ) उड़ान के बदले में पक्षी क्या-क्या त्यागने को तैयार है?

Scanned with CamScanner

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

(क) कविता की अंतिम पंक्तियों में पक्षी क्या कामना कर रहे हैं?

(ख) पक्षी पिंजरबद्ध रहकर क्या-क्या कठिनाई महसूस कर रहा है?

(ग) स्वतंत्र रहकर पक्षी अपनी कौन-सी इच्छा पूरी करना चाहते हैं?

मूल्य आधारित प्रश्न (Values Based Questions)

(क) देश की गुलामी के समय विदेशी शासकों से सुख-सुविधाएँ पाना कनक कटोरी की मैदा के समान था। कवि पक्षी को माध्यम बनाकर भारतीयों को आज़ादी का महत्व किस प्रकार समझाना चाहता है? अपने विचार लिखिए।

(ख) देश की आज़ादी के स्वप्न संजोने वाले क्रांतिकारी वीरों द्वारा गुलामी की जंज़ीरों को तोड़ने के प्रयास और पक्षियों के स्वप्न में क्या कोई अंतर है? अपने विचार व्यक्त कीजिए।

भाषा की समझ (Language and Vocabulary Skills)

* Noun (Abstract Noun)
* Synonyms
* Indigenous Words
* Opposite Words

1. किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान तथा भाव का नाम **संज्ञा** कहलाता है। उदाहरण–

मेरा नाम माधव है। मैं दिल्ली में रहता हूँ।
मैं प्रतिदिन साइकिल से विद्यालय जाता हूँ।
साइकिल चलाना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।

'माधव' और 'दिल्ली' **व्यक्तिवाचक संज्ञा** हैं क्योंकि ये किसी विशेष व्यक्ति तथा स्थान के नाम हैं जबकि 'साइकिल' और 'विद्यालय' **जातिवाचक संज्ञा** हैं क्योंकि यह कोई भी विद्यालय या किसी भी प्रकार की साइकिल हो सकती है। 'स्वास्थ्य' **भाववाचक संज्ञा** है। कुछ चीज़ें या भाव जिन्हें हम केवल महसूस करते हैं, उनके नाम को भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा और भाववाचक संज्ञा के दो-दो उदाहरण लिखिए।

(ख) नीचे दिए गए शब्दों से बनी भाववाचक संज्ञाएँ लिखिए–

(क) टकराना _____ (ख) लाल _____

(ग) बाँधना _____ (घ) मिलना _____

(ङ) उड़ना _____ (च) आकुल _____

(छ) भूलना _____ (ज) भूखा _____

2. **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्दों को उनके उचित स्थान पर पहुँचाइए–**

पेड़	आसमान	खग	वृक्ष	कंचन	विटप	पखेरू	
विहग	वारि	पानी	व्योम	सोना	नभ	स्वर्ण	नीर

(क) तरु _____ _____ _____

(ख) कनक _____ _____ _____

(ग) गगन _____ _____ _____

(घ) पंछी _____ _____ _____

(ङ) जल _____ _____ _____

Scanned with CamScanner

3. हिंदी भाषी क्षेत्र में अनेक लोक भाषाएँ व बोलियाँ बोली जाती हैं। ग्रामीण लोक जीवन के व्यावहारिक शब्द हिंदी में भी प्रयुक्त होते हैं। स्थानीय या आँचलिक शब्दों को हिंदी में 'देशज' या 'देशी' शब्द कहा जाता है; जैसे– थाली, खिड़की, पगड़ी, झाड़ू, झोला आदि।

उचित देशज शब्दों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) रमेश ने _____ पहन ली थी।

(ख) उसने कंधे पर _____ लटका रखा था।

(ग) _____ में भोजन परोसा गया।

(घ) उसके कमरे की _____ बगीचे की ओर खुलती है।

(ङ) वह _____ से फ़र्श साफ़ कर रही है।

4. **सही (✓) का चिह्न लगाकर उचित विलोम शब्द बताइए–**

(क)	**स्वतंत्रता**	–	परतंत्रता ◯	परतंत्र ◯
(ख)	**प्रसन्न**	–	खुश ◯	अप्रसन्न ◯
(ग)	**प्रेम**	–	घृणा ◯	स्नेह ◯
(घ)	**जीना**	–	जागना ◯	मरना ◯
(ङ)	**विघ्न**	–	रुकावट ◯	निर्विघ्न ◯

गतिविधियों के आयाम (Dimension of Activities)

- Creative Writing
- Digital and Verbal Literacy
- Discussion
- Art Skills
- Poem Writing

1. **स्वस्थ पर्यावरण के अभाव में पक्षियों की संख्या निरंतर कम हो रही है। इस तरह से हमारे परिवेश में प्राकृतिक सौंदर्य समाप्त हो रहा है। इस समस्या को मिटाना कितना ज़रूरी है और इसके लिए क्या-क्या उपाय किए जाने चाहिए? अपने विचार लिखिए।**
2. **वे कौन-कौन से पक्षी हैं जो विलुप्त होने की कगार पर हैं? इंटरनेट से जानकारी प्राप्त कीजिए तथा कक्षा में चर्चा कीजिए।**
3. **यदि आपको तीन दिन के लिए कोई पक्षी बनने का वरदान दिया जाए तो आप कौन-सा पक्षी बनना चाहेंगे और क्यों? अपने अनुमान के आधार पर उस पक्षी की स्वभावगत विशेषताओं के बारे में एक सामूहिक चर्चा कीजिए।**
4. **किसी पक्षी का सुंदर-सा चित्र बनाकर उसपर कोई लघु कविता लिखिए।**

Scanned with CamScanner

पाठ का सार

भोजन में नमक जितना ज़रूरी है, उतना ही ज़रूरी जीवन में आपसी रिश्तों में स्नेह और प्रेम है। जिस प्रकार नमक के अभाव में भोजन सरस और पूर्ण नहीं हो सकता उसी प्रकार परिवार में आपसी प्रेम और स्नेह के अभाव में रिश्ते अधूरे होते हैं।

2

नमक की मिठास

चिंतन की कड़ियाँ

माता-पिता अपने बच्चों से और बच्चे भी अपने माता-पिता से बहुत प्यार करते हैं। यद्यपि हमेशा इस प्यार को बोलकर बताना ज़रूरी नहीं होता। परंतु कभी-कभी ऐसा करने से अगर रिश्ते और मज़बूत होते हैं तो हमें ऐसा करने में संकोच नहीं करना चाहिए। साथ ही, जब हम देखते हैं कि माता-पिता हमारे लिए कितना कुछ करते हैं तो हमें भी उनकी खुशी का ध्यान रखना चाहिए। पर्याप्त सम्मान और स्नेह देना चाहिए।

एक राजा की तीन बेटियाँ थीं। एक दिन उसने बेटियों को अपने पास बुलाया और उनसे कहा, "मेरी प्यारी बच्चियो! लोग कहते हैं कि मैं बहुत बड़ा राजा हूँ। वे मुझे प्यार भी करते हैं और इतना सम्मान भी कि मेरे लिए अपनी जान भी देने को तैयार हैं। लेकिन मैं यह जानना चाहता हूँ कि मेरी अपनी बेटियाँ मुझे कितना प्यार करती हैं!"

"पिता जी, मैं आपको बहुत प्यार करती हूँ। मेरा प्यार आकाश की भाँति अनंत और स्वर्ण की भाँति शुद्ध है।" बड़ी बेटी बोली।

यह सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ।

"पिता जी, आपके लिए मेरा प्यार समुद्र की भाँति असीम और हीरे-जवाहरातों की भाँति मूल्यवान है।" मँझली बेटी ने कहा।

राजा की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा।

"पिता जी, मेरा प्यार ऐसा ही है जैसा कि एक बेटी का अपने पिता के लिए होता है।" सबसे छोटी बेटी ने उत्तर दिया।

"लेकिन तुम मुझे कितना प्यार करती हो?" राजा ने फिर पूछा।

तीसरी बेटी सोचने लगी

Scanned with CamScanner

और फिर बोली, "पिता जी, मैं इतना ही कह सकती हूँ कि मैं आपको उतना ही प्यार करती हूँ जितना कि आप और मैं नमक को करते हैं।"

"क्या? तुम मुझे केवल साधारण नमक के बराबर प्यार करती हो?" राजा ने फिर पूछा।

"हाँ, पिता जी!" उसने उत्तर दिया।

राजा क्रोध से लाल-पीला हो गया। "मुझे इस तरह अपमानित करने का फल तुम भुगतोगी।" वह बोला।

उस दिन से राजा ने अपनी छोटी बेटी से बात करना छोड़ दिया। वह उसकी ओर देखता तक नहीं था।

समय बीतता गया। राजा ने अपनी दोनों बड़ी राजकुमारियों का विवाह दो राजाओं के साथ कर दिया। तीसरी राजकुमारी अब अकेली रह गई। राजा ने उसका विवाह एक भिखारी से करके उसे विदा कर दिया। राजकुमारी ने अपना दंड बिना एक शब्द कहे स्वीकार कर लिया।

राजकुमारी बहादुर थी। वह किसी भी स्थिति या कठिनाई का सामना करने के लिए तैयार थी। सबसे पहले वह अपने पति के बारे में जानना चाहती थी कि वह कौन था। पति ने बताया कि वास्तव में वह भिखारी नहीं था। वह इस शहर में नया था और काम ढूँढ़ रहा था। जब उसे कोई काम नहीं मिला तो लाचार होकर एक दिन भोजन के लिए भिक्षा माँगनी पड़ी। उसी समय राजा ने उसे बुलवा लिया।

भिखारी बना वह नवयुवक बहुत महत्वाकांक्षी था। एक वीर और चतुर लड़की को पत्नी के रूप में पाकर वह प्रसन्न था। नवयुवक और उसकी पत्नी शहर से बहुत दूर छोटी-सी झोपड़ी में रहने लगे। पत्नी ने कुछ आभूषण पहने हुए थे। उसने अपने सब आभूषण बेच दिए और उन पैसों से एक नया जीवन आरंभ किया।

उन्होंने थोड़ी-सी ज़मीन किराये पर ली और उसपर खेती करने लगे। फ़सल अच्छी हुई। अब उन्होंने और ज़मीन ले ली। उसपर भी भरपूर फ़सल हुई। इस प्रकार परिश्रम से काम करके धीरे-धीरे उन्होंने अपनी खेती बहुत बढ़ा ली।

कुछ वर्षों में ही उन्होंने ढेर सारा पैसा जमा कर लिया। धीरे-धीरे वे धनी और संपन्न हो गए। कुछ समय बाद उन्होंने अपना मकान भी बनवा लिया। लेकिन अब भी वे संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने अपना परिश्रम साहस और दृढ़ता से जारी रखा।

अब उन्होंने अपने लिए एक बड़ा-सा महल बनवाया और उसमें राजा की भाँति बड़े ठाठ और आराम से रहने लगे। इस समय तक उनकी सामाजिक स्थिति बड़ी अच्छी हो गई थी। वे अपने घर पर शहर के प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण लोगों को निमंत्रित किया करते थे।

एक दिन राजकुमारी ने अपने पति से कहकर भोज का आयोजन करवाया। उसने अपने पिता को भी अपने यहाँ खाने पर निमंत्रित किया। राजा ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया, लेकिन वह इस बात से अनजान था कि वह अपनी बेटी के यहाँ ही खाने पर जा रहा है।

भोज बड़ा शानदार था। राजा समेत सब अतिथि इस आयोजन से बड़े प्रभावित हुए। गृहपति और गृहिणी अपने अतिथियों की देखभाल बड़ी शिष्टता और सुंदर ढंग से कर रहे थे। जैसे ही राजकुमारी अपने पिता के नज़दीक पहुँची, उसने अपना घूँघट नीचे कर लिया और उनसे भोजन के लिए बैठने का आग्रह किया।

Scanned with CamScanner

राजा भोजन के लिए बैठ गया। सोने की कटोरियों में तरह-तरह की चीज़ें उसके सामने रख दी गईं। राजा को भूख लग रही थी, उसने एक कटोरी में से एक ग्रास खाया। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने अनुभव किया कि खाने में नमक नहीं था। उसने दूसरी कटोरी में से सब्ज़ी लेकर चखी– वह भी बिना नमक की थी। इसके बाद उसने बारी-बारी से सभी कटोरियों से भोजन लेकर चखा लेकिन नमक सबमें नदारद था।

राजा को बड़ा गुस्सा आया। उसने अपने चारों ओर देखा तो पाया कि बाकी अतिथि तो मज़े से भोजन का आनंद ले रहे थे।

घूँघट निकाले गृहिणी फिर राजा के समीप आई। उसने बड़े मीठे स्वर में पूछा, "महाराज! क्या आपको हमारे यहाँ का भोजन अच्छा नहीं लगा?"

"तुम्हारा खाना अच्छा लगा?" राजा गरजा, "ऐसा खाना मेरे सामने परोसने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? यह खाना बिना नमक के पकाया गया है। तुमने मुझे ऐसा खाना परोसकर मेरा अपमान किया है।"

गृहिणी ने तब अपना घूँघट उठाते हुए कहा, "तो आपको नमक अच्छा लगता है। निस्संदेह आपके लिए वह सोने और जवाहरातों से अधिक मूल्यवान है।"

राजा ने गृहिणी की ओर देखा। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। अरे! यह तो उसकी तीसरी बेटी उसके सामने खड़ी थी। राजा कुछ न कह सका। पहली बार उसने अनुभव किया कि आदमी के लिए यह साधारण नमक सोने-जवाहरातों से अधिक कीमती है।

"मेरी बच्ची!" राजा ने राजकुमारी से कहा, "मेरी मूर्खता के लिए मुझे क्षमा कर दो।"

छोटी बेटी से जैसा व्यवहार राजा ने किया था, उसके लिए वह लज्जित था। अब वह अपनी गलती को किसी तरह सुधारना चाहता था। उसने छोटी राजकुमारी और उसके पति को अपना सारा राज्य दे दिया और फिर वे सब आनंदपूर्वक रहने लगे।

—केशव शंकर पिल्लै

Scanned with CamScanner

शब्दार्थ

अनंत	–	जिसका अंत न हो	असीम	–	जिसकी सीमा न हो
महत्वाकांक्षी	–	जिसके मन में कुछ बड़ा काम करने की इच्छा हो			
आभूषण	–	गहना	दृढ़ता	–	मज़बूती
गृहपति	–	घर का स्वामी	गृहिणी	–	घर की स्वामिनी
शिष्टता	–	सभ्य तरीके से, शालीनता	ग्रास	–	भोजन का एक अंश
नदारद	–	गायब	निस्संदेह	–	बिना किसी संदेह या शक के

ज्ञान मंजूषा

* रामायण के पात्र श्रीराम और माता-पिता के भक्त श्रवण कुमार के नाम संसार में माता-पिता की आज्ञा मानने और उनकी सेवा करने के लिए प्रसिद्ध हैं।
* माता-पिता धरती पर भगवान का रूप होते हैं। वे ही हमारी सब ज़रूरतें और इच्छाएँ पूरी करते हैं। हमें भूल से भी माता-पिता का दिल नहीं दुखाना चाहिए। सदैव परिश्रम से अपने जीवन को ऐसा बनाने का प्रयास करना चाहिए, जिससे माता-पिता का सम्मान बढ़े।

केशव शंकर पिल्लै
जन्म : 31-07-1902
मृत्यु : 26-12-1989

रचनाकार-परिचय

'शंकर' के नाम से लोकप्रिय केशव शंकर पिल्लै का जन्म कायमकुलम (केरल) में 31 जुलाई 1902 को हुआ था। उन्हें राजनीतिक विषयों पर कार्टून विधा का जनक माना जाता है। उनके द्वारा प्रकाशित 'शंकर्ज़ वीकली' नामक कार्टून पत्रिका काफ़ी चर्चित रही है। बच्चों के प्रति उनका लगाव इतना था कि उन्होंने चिल्ड्रेन्स बुक ट्रस्ट और शंकर इंटरनेशनल डॉल म्यूजियम की स्थापना की थी। भारत सरकार ने इन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया था। इनके सम्मान में कायमकुलम में भारत के एकमात्र कार्टून संग्रहालय की स्थापना 2013 में की गई है।

प्रमुख कृतियाँ– दि वुमन एंड दि क्रो, लाइफ विद ग्रैंड फ़ादर, माइ नेम इज अनिल, बातुनी कछुआ, सुजाता एंड दि वाइल्ड एंलिफेंट आदि।

अभ्यास

पाठ की समझ (Comprehension Skills)

* Listening and Writing Skills
* Oral Expression
* MCQs
* Fill in the Blanks
* Written Expression
  - — Based on Passage
  - — Short Answer Type Questions
  - — Long Answer Type Questions

1. श्रुतलेख

सम्मान	स्वर्ण	अपमानित	स्वीकार	महत्वाकांक्षी
परिश्रम	संतुष्ट	निमंत्रित	घूँघट	गृहिणी

मौखिक प्रश्न (Oral Questions)

2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) राजा की कितनी बेटियाँ थीं?

Scanned with CamScanner

(ख) राजा ने अपनी बेटियों से क्या जानना चाहा था?

(ग) राजा अपनी कौन-सी बेटी से नाराज़ हो गया?

(घ) राजा ने छोटी बेटी की शादी किससे की?

3. सही उत्तर चुनकर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) छोटी बेटी ने पिता से प्यार की तुलना की थी–

(अ) सोने से ◯ (ब) चाँदी से ◯ (स) नमक से ◯ (द) मिठाई से ◯

(ख) अतिथिगण किस आयोजन से बहुत प्रभावित हुए?

(अ) संगीत से ◯ (ब) भोज से ◯ (स) नृत्य से ◯ (द) विवाह से ◯

(ग) राजा ने किससे बात करनी छोड़ दी?

(अ) पत्नी से ◯ (ब) मँझली बेटी से ◯ (स) छोटी बेटी से ◯ (द) बड़ी बेटी से ◯

(घ) राजा के खाने में क्या नहीं था?

(अ) नमक ◯ (ब) मिर्च ◯ (स) चीनी ◯ (द) दही ◯

लिखित प्रश्न (Written Questions)

4. उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरिए–

हीरे-जवाहरातों अपमान लाल-पीला अनंत नमक

(क) पहली बेटी का प्यार आकाश की भाँति _____ और स्वर्ण की भाँति शुद्ध था।

(ख) दूसरी बेटी का प्यार समुद्र की भाँति असीम और _____ की भाँति मूल्यवान था।

(ग) तीसरी बेटी बोली, "मैं आपको उतना ही प्यार करती हूँ जितना कि आप और मैं _____ को करते हैं।"

(घ) राजा क्रोध से _____ हो गया।

(ङ) तुमने मुझे ऐसा खाना परोसकर मेरा _____ किया है।

5. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

भिखारी बना वह नवयुवक बहुत महत्वाकांक्षी था। एक वीर और चतुर लड़की को पत्नी के रूप में पाकर वह प्रसन्न था। नवयुवक और उसकी पत्नी शहर से बहुत दूर छोटी-सी झोपड़ी में रहने लगे। पत्नी ने कुछ आभूषण पहने हुए थे। उसने अपने सब आभूषण बेच दिए और उन पैसों से एक नया जीवन आरंभ किया।

उन्होंने थोड़ी-सी ज़मीन किराये पर ली और उसपर खेती करने लगे। फ़सल अच्छी हुई। अब उन्होंने और ज़मीन ले ली। उसपर भी भरपूर फ़सल हुई। इस प्रकार परिश्रम से काम करके धीरे-धीरे उन्होंने अपनी खेती बहुत बढ़ा ली।

कुछ वर्षों में ही उन्होंने ढेर सारा पैसा जमा कर लिया। धीरे-धीरे वे धनी और संपन्न हो गए। कुछ समय बाद उन्होंने अपना मकान भी बनवा लिया लेकिन अब भी वे संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने अपना परिश्रम साहस और दृढ़ता से जारी रखा। अब उन्होंने अपने लिए एक बड़ा-सा महल बनवाया और उसमें राजा की भाँति बड़े ठाठ और आराम से रहने लगे।

(क) नवयुवक क्यों प्रसन्न था?

(ख) आभूषण बेचकर पति-पत्नी ने क्या किया?

(ग) पति-पत्नी ने ढेर सारा पैसा कैसे जमा किया?

Scanned with CamScanner

(घ) प्रारंभ में नवयुवक और उसकी पत्नी कहाँ रहने लगे?

(अ) महल में ◯ (ब) कोठी में ◯ (स) झोपड़ी में ◯ (घ) बंगले में ◯

(ङ) किराये पर ज़मीन लेकर पति-पत्नी ने क्या किया?

(अ) खेती की ◯ (ब) नृत्यशाला खोली ◯ (स) दुकान खोली ◯ (घ) विद्यालय खोला ◯

6. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

लघूत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

(क) तीसरी बेटी ने अपने पिता के प्रश्न का क्या उत्तर दिया?

(ख) छोटी राजकुमारी को क्या दंड मिला?

(ग) भिखारी बने व्यक्ति ने राजकुमारी को अपने बारे में क्या बताया?

(घ) छोटी बेटी ने पिता को निमंत्रित क्यों किया था?

(ङ) राजकुमारी ने भोज का आयोजन क्यों किया था?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

(क) सबसे छोटी बेटी ने अपने विवाह के बाद जीवन की स्थितियों को बदलने के लिए क्या-क्या किया?

(ख) भोज में राजा को कैसा भोजन परोसा गया? उसे खाकर राजा की क्या प्रतिक्रिया थी?

मूल्य आधारित प्रश्न (Values Based Questions)

(क) राजकुमारी ने पिता के प्रश्न का सीधा और सच्चा जवाब दिया। यदि आपके जीवन में सच बोलने के कारण किसी बड़ी चुनौती के आने की बात हो तो ऐसे में आप क्या करेंगे? अपने विचार लिखिए।

(ख) 'भोजन में नमक जितना ज़रूरी है, उतना ही ज़रूरी जीवन में आपसी रिश्तों में स्नेह और प्रेम है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? लिखिए।

भाषा की समझ (Language and Vocabulary Skills)

- Tatsam Words
- Tadbhav Words
- Opposite Words
- One Word Substitution
- Idioms
- Punctuation Marks

1. संस्कृत भाषा के जो शब्द ज्यों-के-त्यों हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, वे **तत्सम शब्द** कहलाते हैं। जैसे– सूर्य, गृह, अग्नि आदि।

इन शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

(क) रात _____ (ख) सोना _____

(ग) सच _____ (घ) भिखारी _____

(ङ) दुबला _____ (च) बेटी _____

2. संस्कृत भाषा के जो शब्द अपना रूप बदलकर हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, वे **तद्भव शब्द** कहलाते हैं। जैसे– सूरज, घर, आग आदि।

इन शब्दों के तद्भव रूप लिखिए–

(क) भिक्षा _____ (ख) विवाह _____

(ग) दंड _____ (घ) स्वर्ण _____

Scanned with CamScanner

3. निम्नलिखित शब्दों के सही विलोम शब्द चुनकर लिखिए–

(क) सस्ता – _____ (कीमती / महँगा / मुफ़्त)

(ख) आरंभ – _____ (शुभारंभ / पूरा / अंत)

(ग) प्रभावित – _____ (अप्रभावित / प्रभावहीन / प्रभावशाली)

(घ) उपयोगिता – _____ (ज़रूरत / अनुपयोगिता / बेकार)

(ङ) शुद्ध – _____ (शुभ / शुद्धि / अशुद्ध)

4. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए कौन-कौन से एक शब्द सही हैं? कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनिए–

(क) जिसका कोई अंत न हो – _____ (आकाश / अनंत / असीमित)

(ख) जिसके आने की तिथि निश्चित न हो – _____ (बारिश / अतिथि / चोर)

(ग) जिसकी कोई सीमा न हो – _____ (सीमित / असीम / समीप)

(घ) महत्व पाने की इच्छा रखने वाला – _____ (नौकर / राजा / महत्वाकांक्षी)

(ङ) जिसमें कोई संदेह न हो – _____ (असंदेह / निस्संदेह / संदेहपूर्ण)

5. जो वाक्यांश सामान्य अर्थ को प्रकट न करके किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, **मुहावरे** कहलाते हैं। ये भाषा को रोचक, सरस और प्रभावपूर्ण बनाते हैं।

पाठ में आए कुछ मुहावरे और उनके अर्थ दिए जा रहे हैं, आप इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) खुशी का ठिकाना न रहना = अत्यधिक प्रसन्न होना

(ख) लाल-पीला होना = क्रोधित होना

(ग) ठाठ-बाट से रहना = शान-शौकत से रहना

(घ) नदारद होना = गायब हो जाना

(ङ) आश्चर्य का ठिकाना न रहना = बहुत अधिक हैरान होना

6. भाषा को बोलते, पढ़ते या लिखते समय भावों को प्रकट करने के लिए बीच-बीच में या अंत में थोड़ा रुकना होता है। लिखते समय विराम को प्रकट करने वाले कुछ निश्चित चिह्न बने हैं, जो **विराम-चिह्न** कहलाते हैं।

उदाहरण–

"क्या? तुम मुझे केवल साधारण नमक के बराबर प्यार करती हो?" राजा ने फिर पूछा।

"हाँ, पिता जी!" उसने उत्तर दिया।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त रंगीन चिह्न ऐसे ही विराम-चिह्न हैं जो पढ़ने या बोलने में लय, स्वर व अनुतान का संकेत देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। कुछ विराम-चिह्न हैं–

" " **उद्धरण चिह्न** (Inverted Commas) – किसी के कथन को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने के लिए

? **प्रश्नवाचक चिह्न** (Question Mark) – प्रश्नवाचक वाक्यों की समाप्ति पर

, **अल्पविराम** (Comma) – जहाँ बहुत कम समय के लिए रुकना हो

। **पूर्णविराम** (Full Stop) – वाक्य के अंत में

! **विस्मयसूचक चिह्न** (Sign of Exclamation) – मन के भाव; जैसे– भय, क्रोध, प्रशंसा आदि को प्रकट करने के लिए संबोधन सूचक शब्दों के बाद

Scanned with CamScanner

दिए गए वाक्यों में उचित स्थान पर विराम-चिह्न लगाइए–

(क) एक राजा की तीन बेटियाँ थीं

(ख) लेकिन तुम मुझे कितना प्यार करती हो राजा ने फिर पूछा

(ग) उसने बड़े मीठे स्वर में पूछा महाराज क्या आपको हमारे यहाँ का भोजन अच्छा नहीं लगा

(घ) मेरी बच्ची राजा ने राजकुमारी से कहा मेरी मूर्खता के लिए मुझे क्षमा कर दो

(ङ) वाह भोज बड़ा शानदार था

गतिविधियों के आयाम (Dimension of Activities)

- Project Work
- Role Play
- Paragraph Writing
- Verbal Literacy
- Creative Skills
- Advertising

1. **समुद्र के पानी को एकत्र करके नमक बनाया जाता है। गांधी जी ने समुद्र किनारे जाकर नमक आंदोलन चलाया था। इससे संबंधित जानकारी जुटाकर परियोजना तैयार कीजिए।**
2. **'नमक की मिठास' कहानी को नाटक के रूप में अभिनीत कीजिए।**
3. **'माता-पिता के प्रति हमारा कर्तव्य' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।**
4. **पुराने समय से आज तक के समय में जो बदलाव आए हैं, उन्हें अपने दादा-दादी से जानिए और कल्पना कीजिए कि अगली पीढ़ी के बच्चों की फ़रमाइशें और व्यवहार कैसा होगा।**
5. **आइए नमक बनाएँ**

   खारे पानी को लगातार उबालते रहें। पूरा पानी समाप्त होने पर बरतन में केवल नमक शेष रह जाएगा। इस प्रक्रिया को आप अपने अभिभावक की निगरानी में करके देखिए।
6. **डॉक्टर सलाह देते हैं कि हमेशा आयोडीन युक्त नमक खाएँ। आयोडीन नमक बनाने वाली कंपनी की ओर से एक विज्ञापन का नमूना तैयार कीजिए।**

Scanned with CamScanner

3

बस की यात्रा

पाठ का सार

यह पाठ विपरीत परिस्थिति में फँसे हुए व्यक्ति की मन:स्थिति को प्रतिबिंबित करता है। जब अन्य कोई विकल्प न हो तो परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल लेना व तदनुसार तालमेल बिठा लेना मनुष्य की विवशता भी है और समझदारी भी। हलके-फुलके अंदाज़ में इसे हम यूँ भी ले सकते हैं– 'मरता क्या न करता'। इसी विचार पर आधारित यह व्यंग्य मन को खूब गुदगुदाता है।

चिंतन की कड़ियाँ

मनुष्य का जीवन चलायमान है। उसे सदैव यातायात के साधनों का प्रयोग करना पड़ता है। सार्वजनिक वाहन यात्रा की दृष्टि से सस्ते साबित होते हैं। कुछ वाहनों के मालिक यात्रा द्वारा केवल पैसा कमाना चाहते हैं। यह अत्यंत आवश्यक है कि वे वाहन को अच्छी दशा में रखें क्योंकि उनके वाहन में बैठे अनेकों यात्रियों का जीवन उन्हीं पर निर्भर है।

हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन मिला देती है। सुबह घर पहुँच जाएँगे। हममें से दो को सुबह काम पर हाज़िर होना था, इसीलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना ज़रूरी था। लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते। क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं? नहीं, बस डाकिन है।

बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी। खूब वयोवृद्ध थी। सदियों के अनुभव के निशान लिए हुए थी। लोग इसलिए इससे सफ़र नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा। यह बस पूजा के योग्य थी। उसपर सवार कैसे हुआ जा सकता है!

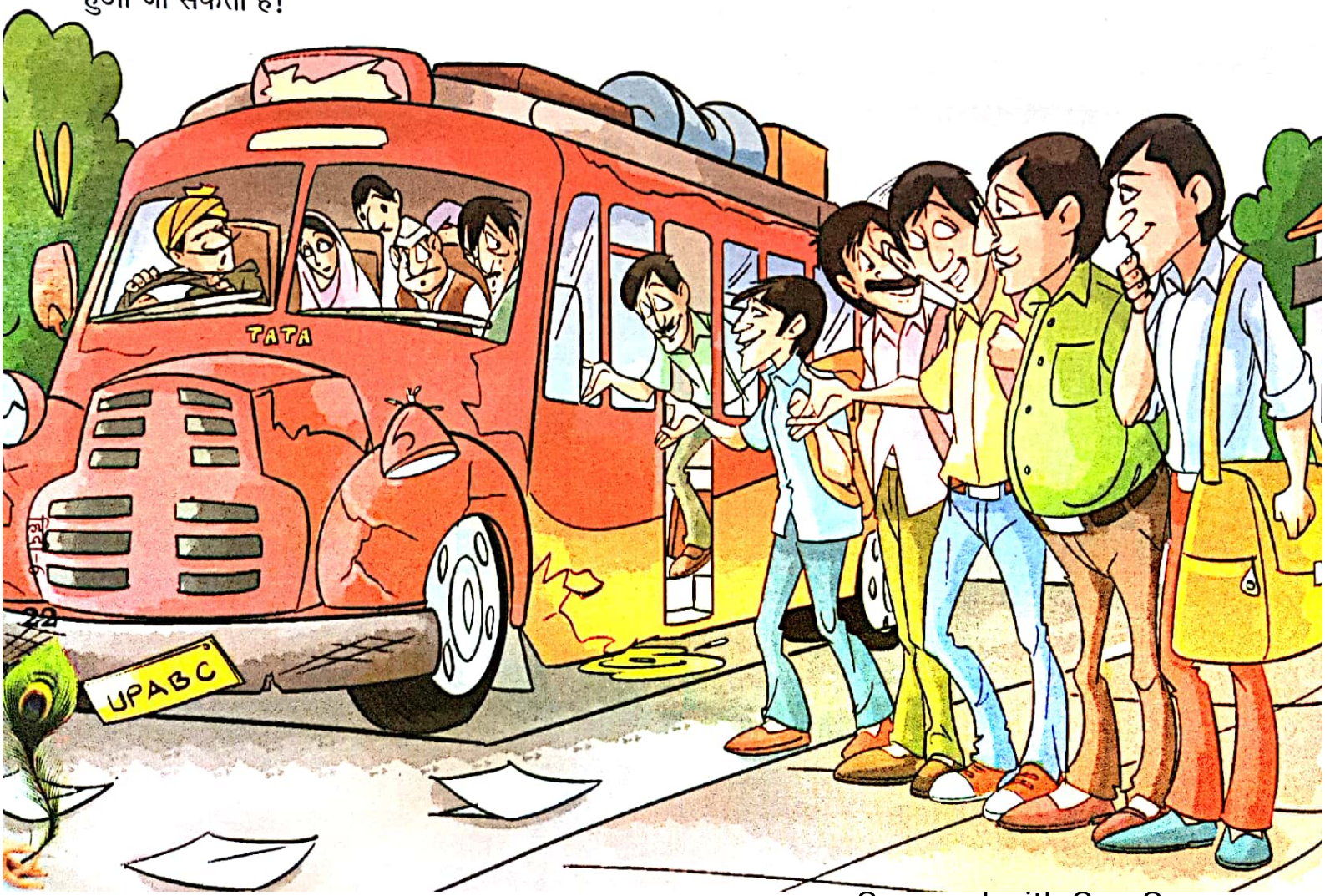

Scanned with CamScanner

बस-कंपनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस से जा रहे थे। हमने उनसे पूछा, "यह बस चलती भी है?" वह बोले, "चलती क्यों नहीं है जी! अभी चलेगी।" हमने कहा, "वही तो हम देखना चाहते हैं। अपने आप चलती है यह?"

"हाँ जी, और कैसे चलेगी?"

गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।

हम आगा-पीछा करने लगे। डॉक्टर मित्र ने कहा, "डरो मत, चलो! बस अनुभवी है। नई-नवेली बसों से ज़्यादा विश्वसनीय है। हमें बेटों की तरह प्यार से गोद में लेकर चलेगी।"

हम बैठ गए। जो छोड़ने आए थे, वे इस तरह देख रहे थे जैसे अंतिम विदा दे रहे हैं। उनकी आँखें कह रही थीं, "आना-जाना तो लगा ही रहता है। आया है, सो जाएगा—राजा, रंक, फ़कीर। आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए।"

इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया। ऐसा लगा, जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं। काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था। हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए। इंजन चल रहा था। हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है।

बस सचमुच चल पड़ी और हमें लगा कि यह गांधी जी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के वक्त अवश्य जवान रही होगी। उसे ट्रेनिंग मिल चुकी थी। हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था। पूरी बस सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौर से गुज़र रही थी। सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था। कभी लगता सीट बॉडी को छोड़कर आगे निकल गई है। कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है। आठ-दस मील चलने पर सारे भेदभाव मिट गए। यह समझ में नहीं आता था कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

एकाएक बस रुक गई। मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ड्राइवर ने बालटी में पेट्रोल निकालकर उसे बगल में रखा और नली डालकर इंजन में भेजने लगा। अब मैं उम्मीद कर रहा था कि थोड़ी देर बाद बस-कंपनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में

Scanned with CamScanner

रख लेंगे और उसे नली से पेट्रोल पिलाएँगे, जैसे माँ बच्चे के मुँह में दूध की शीशी लगाती है।

बस की रफ़्तार अब पंद्रह-बीस मील हो गई थी। मुझे उसके किसी हिस्से पर भरोसा नहीं था। ब्रेक फेल हो सकता है, स्टीयरिंग टूट सकता है। प्रकृति के दृश्य बहुत लुभावने थे। दोनों तरफ़ हरे-भरे पेड़ थे, जिन पर पक्षी बैठे थे। मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था। जो भी पेड़ आता, डर लगता कि इससे बस टकराएगी। वह निकल जाता तो दूसरे पेड़ का इंतज़ार करता। झील दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता लगा जाएगी।

एकाएक फिर बस रुकी। ड्राइवर ने तरह-तरह की तरकीबें कीं, पर वह चली नहीं। सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया था, कंपनी के हिस्सेदार कह रहे थे, "बस तो फर्स्ट क्लास है जी! यह तो संयोग की बात है।"

क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी। लगता, जैसे कोई वृद्धा थककर बैठ गई हो। हमें ग्लानि हो रही थी कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं। अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करनी पड़ेगी।

हिस्सेदार साहब ने इंजन खोला और कुछ सुधारा। बस आगे चली। उसकी चाल और कम हो गई थी।

धीरे-धीरे वृद्धा की आँखों की ज्योति जाने लगी। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और कहती, "निकल जाओ, बेटी! अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही।"

एक पुलिया के ऊपर पहुँचे ही थे कि एक टायर फिस्स करके बैठ गया। वह बहुत ज़ोर-से हिलकर थम गई। अगर स्पीड में होती तो उछलकर नाले में गिर जाती। मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा। वह टायरों की हालत जानते हैं फिर भी जान हथेली पर लेकर इसी बस से सफ़र कर रहे हैं। उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है। सोचा इस आदमी के साहस और बलिदान की भावना का सही उपयोग नहीं हो रहा है। इसे तो किसी क्रांतिकारी आंदोलन का नेता होना चाहिए। अगर बस नाले में गिर पड़ती और हम सब मर जाते तो देवता बाँहें पसारे उसका इंतज़ार करते। कहते, "वह महान आदमी आ रहा है जिसने एक टायर के लिए प्राण दे दिए। मर गया, पर टायर नहीं बदला।"

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चली। अब हमने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना क्या, कहीं भी, कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। लगता था, ज़िंदगी इसी बस में गुज़ारनी है और इससे सीधे उस लोक को प्रयाण कर जाना है। इस पृथ्वी पर उसकी कोई मंज़िल नहीं है। हमारी बेताबी, तनाव खत्म हो गया। हम बड़े इत्मीनान से घर की तरह बैठ गए। चिंता जाती रही। हँसी-मज़ाक चालू हो गया।

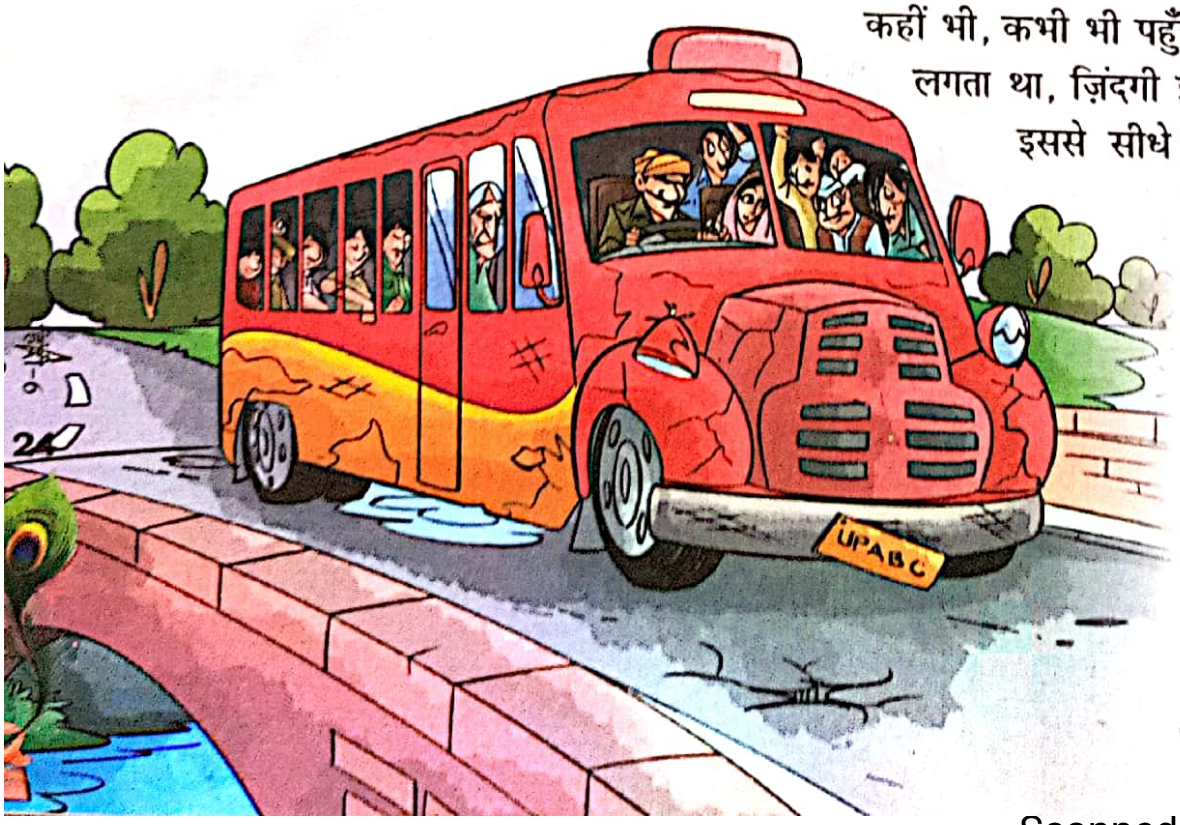

—हरिशंकर परसाई

Scanned with CamScanner

शब्दार्थ

डाकिन	–	मनहूस (पाठ के संदर्भ में)	श्रद्धा	–	आस्था, आदर का भाव
वयोवृद्ध	–	बहुत पुरानी (पाठ के संदर्भ में)	निमित्त	–	साधन
प्राणांत	–	मृत्यु	बियाबान	–	सुनसान जंगल, उजाड़ जगह
अंत्येष्टि	–	दाह-संस्कार	उत्सर्ग	–	बलिदान, त्याग
प्रयाण	–	उद्देश्यपूर्ण गति में बढ़ते जाना	इत्मीनान	–	चैन

ज्ञान मंजूषा

साहित्य की व्यंग्य विधा का उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं है, बल्कि किसी विषय विशेष पर जनमानस को झकझोरना भी है। व्यंग्य और हास्य के बीच मूल अंतर यह है कि हास्य का केंद्र बिंदु मनोरंजन मात्र रहता है।

हरिशंकर परसाई
जन्म : 22-08-1924
मृत्यु : 10-08-1995

रचनाकार-परिचय

श्री हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त सन् 1924 को मध्य प्रदेश (तत्कालीन) के होशंगाबाद ज़िले के अंतर्गत आने वाले जमानी गाँव में हुआ था। इन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदी में एम॰ ए॰ किया। कुछ वर्षों तक विभिन्न सरकारी, गैर-सरकारी विभागों में नौकरी करने के बाद इन्होंने 1957 से स्वतंत्र लेखन आरंभ किया। परसाई जी ने अनेक कहानियाँ, उपन्यास व निबंध लिखे, लेकिन इन्हें मुख्य रूप से व्यंग्य विधा के लिए जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि हिंदी साहित्य में व्यंग्य को विधा का दर्जा इन्होंने ही दिलवाया।

प्रमुख कृतियाँ– हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे (कहानी-संग्रह), रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज (उपन्यास), भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत, तुलसीदास चंदन घिसैं, सदाचार का ताबीज़, काग भगोड़ा, विकलांग श्रद्धा का दौर आदि इनकी लोकप्रिय रचनाएँ हैं।

अभ्यास

पाठ की समझ (Comprehension Skills)

* Listening and Writing Skills
* Oral Expression
* MCQs
* Fill in the Blanks
* Written Expression
  — Based on Passage
  — Short Answer Type Questions
  — Long Answer Type Questions

1. श्रुतलेख

श्रद्धा वृद्धावस्था हिस्सेदार निमित्त अवज्ञा इत्मीनान

मौखिक प्रश्न (Oral Questions)

2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) पाँचों मित्रों ने शाम वाली बस से जाने का निश्चय क्यों किया?

(ख) बस की अवस्था किसके समान लगती थी?

(ग) लेखक और उसके मित्र खिड़की से दूर सरककर क्यों बैठ गए?

(घ) पहली बार बस किस कारण रुकी?

Scanned with CamScanner

3. सही उत्तर चुनकर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) बस को देखकर श्रद्धा इसलिए उमड़ पड़ी क्योंकि यह–

(अ) तीर्थ-यात्रा पर जा रही थी। ○ (ब) वयोवृद्ध तथा टूटी-फूटी थी। ○

(स) सजी-धजी थी। ○ (द) ऐतिहासिक थी। ○

(ख) बस स्टार्ट होने पर यात्री अपने आपको कहाँ बैठा अनुभव कर रहे थे?

(अ) बस के अंदर ○ (ब) कोठरी में ○ (स) इंजन में ○ (द) महल में ○

(ग) लेखक को क्या देखकर लगा कि बस इसमें गोता लगाएगी?

(अ) झील ○ (ब) नदी ○ (स) तालाब ○ (द) समुद्र ○

(घ) लेखक के अनुसार देवता बाँहें पसारकर किसका स्वागत करते?

(अ) कंपनी के हिस्सेदार का ○ (ब) लेखक के मित्रों का ○

(स) बस का ○ (द) लेखक का ○

लिखित प्रश्न (Written Questions)

4. उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरिए–

डॉक्टर पेट्रोल प्रकृति वृद्धावस्था असहयोग

(क) लोग इसलिए इस बस से सफ़र नहीं करना चाहते कि _____ में इसे कष्ट होगा।

(ख) _____ मित्र ने कहा, "डरो मत, चलो! बस अनुभवी है।"

(ग) _____ की टंकी में छेद हो गया।

(घ) बस का हर हिस्सा एक-दूसरे से _____ कर रहा था।

(ङ) _____ के दृश्य बहुत लुभावने थे।

5. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

हम बैठ गए। जो छोड़ने आए थे, वे इस तरह देख रहे थे जैसे अंतिम विदा दे रहे हैं। उनकी आँखें कह रही थीं, "आना-जाना तो लगा ही रहता है। आया है, सो जाएगा–राजा, रंक, फ़कीर। आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए।"

इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया। ऐसा लगा, जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं। काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था। हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए। इंजन चल रहा था। हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है।

(क) विदा करने आए लोगों की प्रतिक्रिया देखकर लेखक को कैसा लगा?

(ख) 'काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था। वाक्य में 'बच' शब्द का दो भिन्न अर्थों में प्रयोग हुआ है। दोनों के अर्थ लिखिए।

(ग) शब्दों के अर्थ बताइए– रंक, निमित्त

(घ) इंजन स्टार्ट होने पर क्या हुआ?

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए–

'आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए।'

Scanned with CamScanner

6. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

लघूत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

(क) लोगों ने बस को डाकिन क्यों कहा?

(ख) लेखक मार्ग में आने वाले हर पेड़ को अपना दुश्मन क्यों समझ रहा था?

(ग) दूसरी गाड़ी को आता देख बस एकदम किनारे क्यों खड़ी हो जाती थी?

(घ) लोगों ने शाम वाली बस में यात्रा न करने की सलाह क्यों दी?

(ङ) पेट्रोल की टंकी में छेद होने पर ड्राइवर ने क्या किया?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

(क) लेखक ने बस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा। लेखक को ऐसा क्यों लगा कि हिस्सेदार की योग्यता का सही उपयोग नहीं हो रहा?

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए–

– 'गजब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।'

– 'अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करनी पड़ेगी।'

मूल्य आधारित प्रश्न (Values Based Questions)

(क) 'आत्म अनुभव ही श्रेष्ठ अनुभव है।' इस वाक्य को कहानी में लेखक ने कैसे दर्शाया है? प्रकाश डालिए।

(ख) पाठ में लेखक ने बस की अवस्था वृद्धा के समान बताई है परंतु, इसमें भी सीख प्रदान की है। आप वृद्धों के प्रति अपने मन में क्या विचार रखते हैं? स्पष्ट कीजिए।

भाषा की समझ (Language and Vocabulary Skills)

- Prefix
- Opposite Words
- Homonyms
- Idioms

1. **उपसर्ग** वे शब्दांश होते हैं, जो शब्दों के पहले जुड़कर उनके मूल अर्थ को बदल देते हैं; जैसे– 'अन्याय' शब्द में 'न्याय' शब्द है और 'अ' उपसर्ग। इसी प्रकार आ, अन, उप, सम, वे, नि आदि उपसर्ग होते हैं।

रंगीन शब्द में लगे उपसर्ग पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था।

(अ) अ ◯ (ब) अस ◯ (स) योग ◯ (द) अस् ◯

(ख) लेखक समय का सदुपयोग करना चाहता था।

(अ) सत् ◯ (ब) सदुप ◯ (स) स ◯ (द) सदु ◯

(ग) लेखक बस की अनदेखी न कर सका।

(अ) अन् ◯ (ब) अ ◯ (स) आ ◯ (द) अन ◯

(घ) बेचारे यात्रियों की हालत खराब हो रही थी।

(अ) ब ◯ (ब) बे ◯ (स) बेच ◯ (द) आरे ◯

(ङ) नेता जी आमरण अनशन पर बैठे हैं।

(अ) आम ◯ (ब) आ ◯ (स) अ ◯ (द) ण ◯

Scanned with CamScanner

2. निम्नलिखित शब्दों के लिए सही विलोम शब्द का चयन करके गोला लगाइए–

(क)	विश्वास	×	भरोसा	अविश्वास	अंधविश्वास
(ख)	योग्य	×	अनयोग्य	सुयोग्य	अयोग्य
(ग)	दुश्मन	×	मित्र	शत्रु	दोस्त
(घ)	सफलता	×	असफलता	सुफलता	फलहीनता
(ङ)	सदुपयोग	×	उपयोग	दुरुपयोग	अनुपयोग

3. ऐसे शब्द जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं, **अनेकार्थी शब्द** कहलाते हैं। पाठ में प्रयुक्त यह शब्द युग्म देखिए– आना-जाना। 'आना-जाना' सामान्य क्रिया के रूप में भी प्रयुक्त होता है तथा इसका प्रयोग जन्म-मृत्यु के अर्थ में भी किया जाता है; जैसे–

आना-जाना (सामान्य क्रिया के अर्थ में) – दफ़्तर के काम से मेरा मुंबई आना-जाना लगा ही रहता है।

आना-जाना (जन्म-मृत्यु के अर्थ में) – संसार में जीव का आना-जाना लगा ही रहता है।

इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों का दो भिन्न अर्थों में वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क)	**उत्तर**	–	एक दिशा	जवाब
(ख)	**कल**	–	मशीन	बीता हुआ / आने वाला कल
(ग)	**बस**	–	यातायात का साधन	और अधिक नहीं
(घ)	**भाग**	–	हिस्सा	भाग्य
(ङ)	**पन्ना**	–	एक स्थान	एक रत्न

4. **नीचे दिए गए मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

(क) कूच करना
(ख) अंतिम विदाई देना
(ग) आगा-पीछा करना
(घ) जान हथेली पर लेना

गतिविधियों के आयाम (Dimension of Activities)

- Art Skill and Creative Writing
- Information Gathering
- Project Work
- Verbal Literacy
- Creative Writing

1. **इस पाठ में वर्णित बस का चित्र अपनी कल्पनानुसार बनाइए तथा आत्मकथा के रूप में बस की व्यथा लिखिए।**
2. **'सविनय अवज्ञा आंदोलन' किसके नेतृत्व में, किस उद्देश्य से तथा कब चलाया गया था? इतिहास की उपलब्ध पुस्तकों से जानकारी प्राप्त कर परियोजना तैयार कीजिए।**
3. **पाठ में पाँच मित्र एक साथ यात्रा कर रहे थे। मित्रों के साथ समय बिताने में आनंद आता है। अब बताइए–**
   (क) **'मैत्री दिवस' (Friendship Day) किस महीने में तथा क्यों मनाया जाता है?**
   (ख) **क्या 'मैत्री दिवस' वर्ष में केवल एक दिन ही मनाया जाना चाहिए?**
4. **जब मैत्री दिवस नहीं मनाया जाता था तब भी लोग अपने मित्र के प्रति अपना स्नेह व्यक्त करते थे। कृष्ण और सुदामा की मित्रता तो दोस्ती की अनुपम मिसाल है। इन लोगों की मित्रता को लोग आज भी क्यों याद करते हैं? संक्षेप में लिखिए।**

Scanned with CamScanner